9. संस्कृतेन अनुवादः कार्यः । 20

अद्वैत वेदान्त का साहित्य विस्तृत और विशाल है। इस दृष्टि से उसकी तुलना न्याय के साहित्य से की जा सकती है। वास्तव में भारतीय दार्शनिकों की मोक्षशास्त्र और प्रमाणशास्त्र दोनों में समान रूचि रही है। मोक्षशास्त्र की दृष्टि से अद्वैत वेदान्त का विशेष महत्व है और प्रमाण शास्त्र की दृष्टि से न्याय का। अद्वैत वेदान्त का केन्द्रगत सम्प्रत्यय आत्मा या ब्रह्म है। इस प्रत्यय को ठीक से समझे बिना न हम वेदान्त की ज्ञानमीमांसा को ही सही रूप में हृदयंगम कर सकते हैं, न उसके मोक्षसिद्धान्त को।

A **(Printed Pages 4)**

AS-2157

एम. ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

संस्कृत

वर्ग - ग- दर्शन

पंचमप्रश्नपत्रम्

समयः - घण्टात्रयम् **पूर्णाङ्काः - 100**

निर्देश : **पञ्च** प्रश्नाः समाधेयाः। प्रथम प्रश्नोऽनिवार्यःऽस्ति। प्रतिवर्गादेकः प्रश्नः समाधेयः।

1. संक्षिप्तटिप्पण्यः लेखनीयाः - 4×5=20
   (क) उदयनाचार्यः
   (ख) तत्त्वकौमुदी
   (ग) पतञ्जलिः
   (घ) जयन्तः
   (ङ) पुरूषः

प्रथमो वर्गः

2. संस्कृतेन निबन्धो लेख्यः। 20

   ''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।''

3. ''सांख्ययोगौ पृथग्वालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः'' संस्कृतभाषया लेखो लिख्यताम् । 20

द्वितीयो वर्ग :

4. संस्कृतेन निबन्धः लेखनीयः। 20

मीमांसादर्शनम्

5. "ब्रह्मसत्यं, जगन्मिथ्या" इति विषयमुररीकृत्य संस्कृतेन निबन्धं विलिख्यताम् । 20

तृतीयो वर्ग :

6. हिन्दीभाषया अनुवादः विधेयः। 20

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।।
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महावाहो ययेदं धार्यते जगत् ।।
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।।
मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा। इव।।

7. हिन्दी भाषया अनुवादः विधेयः।। 20

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः।।
अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्ना कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।।
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः।।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये।

चतुर्थो वर्गः

8. संस्कृतेन अनुवादः कार्यः। 20

श्रुति यह भी कहती है कि एक को जानने से सब कुछ जान लिया जाता है; यह तभी सम्भव है जब एक मात्र ब्रह्म ही, जो जगत् का कारण है सत् पदार्थ हो। छान्दोग्य के छठे अध्याय में अपने पुत्र श्वेतकेतु को समझाते हुए आरूणि ने कहा कि कारण को जान लेने से उसके समस्त कार्य जान लिये जाते हैं, क्यों कि कार्य नाम-रूप-मात्र है। अद्वैत वेदान्त ब्रह्म अथवा आत्मा को प्रमाणों का विषय नहीं मानता, वह उसे ज्ञान का विषय भी नहीं मानता।